पाठ 6. धरती का आँगन

पाठ का परिचय

धरती का आँगन स्वयं अपनी ही शोभा को देख गर्व का अनुभव कर रहा है। आकाश भी धरती की इस सुंदरता से प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है। गेहूँ की लहलहाती बालियों ने धरती के आँचल को धन-धान्य से भर दिया है। इस आँचल से मानव का उस समय से नाता है जबसे यह पृथ्वी बनी है। कवि सभी को बीज बोकर धरती को और भी अधिक वैभवशाली बनाने के लिए कह रहे हैं। भारत अपने-आप में इतना अधिक वैभवशाली है कि स्वर्गलोक में भी इसका गौरव समा नहीं पाता। भारत में ऐसे लोग हैं जो अपना सब कुछ दान करने में भी नहीं हिचकिचाते। ये लोग त्याग और तप के साथ अपना जीवन जीते हैं और ईश्वर के प्रति आस्था रखते हुए श्रम को ही श्रेष्ठ मानते हैं। कवि कहते हैं कि हमें वसुधैव कुटुंबकम की भावना को मन में रखते हुए नए युग के निर्माता बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

यह पूरी धरती हमारा परिवार है। हम सभी एक ही ईश्वर की संतान हैं। हम सभी एक ही धर्म को मानने वाले हैं। हमारा धर्म है मानवता। हमें सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। त्याग और तपस्या जीवन को उत्तम बनाते हैं।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका कविता का वाचन करें। पहले स्वयं लयबद्ध तरीके से कविता का वाचन करें तथा उसके बाद बच्चों को पहले एक साथ तथा बाद में एक-एक कर कविता का गान करने को कहें। कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। कविता की पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें। बच्चों से बीच-बीच में कविता से संबंधित प्रश्न करें।

- धरती का यौवन किसका हृदय लुभा रहा है?
- मानव का नाता प्रकृति के साथ कैसा है?
- नए बीज किस-किस तरह के बोए जा सकते हैं?

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से करें –

- धरती को हरी-भरी बनाने के लिए तुम क्या प्रयत्न करते हो?
- भारत की संस्कृति व सभ्यता की तुम्हें कितनी जानकारी है?
- भारत विश्व के सभी देशों में श्रेष्ठ क्यों है?
- भारत की किस विशेषता को तुम अधिक महत्व देते हो?
- क्या तुम मानते हो कि यह पूरी धरती एक परिवार है?
- भारत में त्याग और तपस्या का जीवन जीने वाले अनेक ऋषि-मुनि हुए हैं। क्या तुम इस बात से सहमत हो?